

क्षिप्रकर वि. (तत्.) कुशल, मुस्तैद, तेजी से काम करने वाला।

क्षिप्रचेता वि. (तत्.) सचेत, जागरूक, प्रत्युत्पन्नमति।

क्षिप्रमूत्र पुं. (तत्.) मूत्रेद्रिय संबंधी एक प्रकार का रोग।

क्षिप्रश्येण पुं. (तत्.) एक प्रकार का बाज पक्षी।

क्षिप्रहस्त वि. (तत्.) जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो, जल्दी काम करने वाला कुशल पुं. (तत्.) अग्नि का एक नाम, एक राक्षस का नाम।

क्षिप्रहोम पुं. (तत्.) सायंकाल और प्रातःकाल का होम, जो जल्दी और संक्षिप्त होता है।

क्षिया स्त्री. (तत्.) 1. विनाश, बर्बादी 2. हानि 3. आचार का उल्लंघन 4. अनौचित्य 5. क्षय।

क्षीजन पुं. (तत्.) बाँस की सरसराहट।

क्षीण वि. (तत्.) 1. दुबला, पतला 2. सूक्ष्म 3. क्षयशील 4. घटा हुआ, जो काम हो गया हो, थोड़ा 5. मृत, समाप्त 6. निर्धन।

क्षीणकंठ वि. (तत्.) 1. कम आवाज में, धीमी आवाज में 2. जिसका गला सूख गया हो, सूखे गले वाला उदा. जरा क्षीण कंठ से मैंने अभिनय करते हुए कहा, हला, लज्जा तो तरुणियों का स्वाभाविक अलंकार है -बाणभट्ट की आत्मकथा।

क्षीणकाय वि. (तत्.) दुबले-पतले शरीर वाला, दुर्बल।

क्षीणचंद्र पुं. (तत्.) सात या इससे कम कलाओं वाला चंद्रमा।

क्षीणता स्त्री. (तत्.) 1. निर्बलता, कमजोरी, दुबलापन, पतलापन 2. सूक्ष्मता।

क्षीणपाप वि. (तत्.) जिसके पाप नष्ट हो गए हों।

क्षीणपुण्य वि. (तत्.) जो अपने सब पुण्य कर्मों का फल भोग चुका हो।

क्षीण प्रकृति वि. (तत्.) क्षुद्र या तुच्छ प्रकृति वाला, जिस (राजा) की प्रकृति के कारण प्रजा दीन-हीन हो गई हो या दरिद्र होती जाती हो।

क्षीणमध्य वि. (तत्.) पतली कमर वाला।

क्षीणविक्रांत वि. (तत्.) पौरुषहीन।

क्षीणवित्त वि. (तत्.) गरीब, कंगाल।

क्षीणवीर्य वि. (तत्.) शक्तिहीन, जिसका पराक्रम घट गया हो।

क्षीणवृत्ति वि. (तत्.) बेरोजगार, बेकार।

क्षीणसार वि. (तत्.) 1. सूखा, शुष्क 2. जिसका रस सूख गया हो, रसरहित, रसहीन 3. तत्त्वहीन।

क्षीणार्थ वि. (तत्.) निर्धन, जिसकी संपत्ति नष्ट हो गई हो।

क्षीबा स्त्री. (तत्.) 1. मदिरा पी हुई स्त्री 2. जो स्त्री मदिरा पिए हुए मस्त हो उदा. अंतःपुर की परिचारिकाएँ ही नहीं कुसुमलताएँ भी क्षीबा बनी हुई थीं -बाणभट्ट की आत्मकथा।

क्षीयमाण वि. (तत्.) नाशवान, नित्य घटने या कम होने वाला, जो छीजता जाए।

क्षीर पुं. (तत्.) 1. दूध, पय 2. तरल पदार्थ 3. जल, पानी 4. बरगद, गूलर आदि वृक्षों से निकलने वाला दुग्ध रूप रस 5. सरल नामक वृक्ष का गोंद।

क्षीरकंठ पुं. (तत्.) दूध पीने वाला बच्चा, दुधमुँहा।

क्षीरकाकोली स्त्री. (तत्.) एक प्रकार की जड़ी जो वीर्यवर्धक मानी जाती है।

क्षीरखर्जूर पुं. (तत्.) पिंड खजूर।

क्षीरघृत पुं. (तत्.) दूध मथकर निकाला हुआ मक्खन।

क्षीरज पुं. (तत्.) 1. चंद्रमा 2. शंख 3. कमल 4. दही 5. मोती 6. समुद्र मंथन से उद्भूत अमृत 7. शेषनाग 8. समुद्री नमक।

क्षीरजा स्त्री. (तत्.) लक्ष्मी।

क्षीरतुंबी स्त्री. (तत्.) लौकी, कद्दू।

क्षीरतैल पुं. (तत्.) वैद्यक में एक प्रकार का औषध सिद्ध तेल।

क्षीरदल पुं. (तत्.) आक, मदारा।